जुलाई–अगस्त 2019

ग्रामीण शिक्षा केन्द्र

# मोरंगे

बाल पत्रिका

# इस बार


**खेल खिलाड़ी**

5 रामवीर

**उड़ान**

8 छम्मा–छम्मा

9 राखी / बाड़ी में बंदर

10 रामकथा

11 मैं बाजार जाऊँ

12 ईमानदारी

13 विश्वास

**ज्ञान विज्ञान**

14 विज्ञान अन्ध विश्वास पर भारी

16 बरसात के बादल

**कलाकारी**

18 कागज का थैला

**बात लै चीत ले**

19 अमीरी–गरीबी

20 मेहनत का फल

22 **माथापच्ची**
**हीहीही–ठीठीठी**

**आरती नायक,**
उम्र–8 वर्ष, समूह–लहर


23 **कुछ हमने बढ़ायी, कुछ तुम बढ़ाओ**



**सम्पादन :** **विष्णु गोपाल**
**सहयोग :** उदय पाठशालाओं के बच्चे व शिक्षक
**डिज़ाइन :** अश्विनी कुमार पंकज
**प्रूफ़ :** सुरेश चंद
**वितरण :** जितेन्द्र अग्रवाल
आवरण पर चित्र–बेनी प्रसाद, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया
**वर्ष** 10 **अंक** 109–110

मोरंगे' का प्रकाशन यात्रा फाउण्डेशन–आस्ट्रेलिया, आशा फोर एज्यूकेशन, पोर्टिकस–नीदरलेण्ड व एच.टी. पारेख फाउण्डेशन के सहयोग से हो रहा है।



**प्रबंधन**
शुभम गर्ग
निदेशक,
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र समिति

**पत्रिका का पता**
मोरंगे
ग्रामीण शिक्षा केन्द्र
रणथम्भौर रोड़, सवाई माधोपुर
(राजस्थान) 322001
फोन : 07462–220957
फेक्स : 07462–220460

# परिचय

'ग्रामीण शिक्षा केन्द्र' राजस्थान राज्य के सवाई माधोपुर जिले में स्थित एक गैर–सरकारी (निजी) संस्था है। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र का जन्म 1996 में हुआ था और इसका पंजीकरण 'राजस्थान सोसाइटी अधिनियम–1958' के तहत एक संस्था के रूप में किया गया। जी.एस.के. को संस्थागत बनाने का विचार समुदाय की मांग से उभरा ताकि क्षेत्र की आगामी पीढ़ी जीवन में आजीविका जैसी आवश्यक क्षमताओं और जीवन की कठिनाइयों में निष्पक्ष रूप से स्वस्थ निर्णय लेने में सफल रहे। सामूहिक रूप से हमने रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास रहने वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्कूल शिक्षा कार्यक्रम शुरू करने के बारे में सोचा।

**अंजली बैरवा,** कक्षा–6, राजकीय विद्यालय, दौलतपुरा

हमने अपना पहला प्रयास और अपनी पहली स्कूली यात्रा की शुरूआत वर्ष 2004 में गाँव–जगनपुरा (खवा) में बबूल के पेड़ के नीचे से की। गाँवों के बच्चों और समुदाय के सहयोग से उदय सामुदायिक विद्यालय की शुरूआत हुई। गाँव वालों ने अपनी जमीन, फसल, श्रम, समय, पैसा और अपने अनुभव से विद्यालय को आगे

बढ़ाया। इसके पश्चात 2009 में फरिया गाँव में और 2014 में गिरिराजपुरा गाँव में उदय सामुदायिक पाठशाला सफलतापूर्वक शुरूआत की गई। ये तीनों उदय पा. ठशाला रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान की परिधि पर स्थित है। राष्ट्रीय उद्यान में जानव. रों, पक्षियों और सरिसृपों की एक विशाल विविधता शामिल है। जिसमें से बाघ सबसे प्रचलित है। वन्यजीवन का संबंध इन बच्चों और रहने वाले समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण घटक है। जो इनके रहन–सहन, खान–पान, आजीविका, संस्कृति, रीति–रिवाज, बोली–भाषा और व्यवहार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। जिसमें इनकी सैंकड़ों पीढियों का ज्ञान, कौशल और अनुभवों का एक विशाल भंडार है। इतने समृद्ध ज्ञान की अनदेखी कर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का दावा करना खोखला साबित होगा। अतः ग्रामीण शिक्षा केन्द्र इनके इसी ज्ञान और परिवेशीय अनुभवों को आधार बनाकर भावी शिक्षा से जोड़ने का प्रयास कर ही रही है।

क्षेत्र में हम पूर्व–प्राथमिक, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय शिक्षा में काम कर रहे हैं। पिछले वर्षों में 'उदय सामुदायिक पाठशाला' रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आस–पास के सीमांत समुदाय और उनके बच्चों के लिए गुणवत्ता शिक्षा के क्षेत्र में जाना माना नाम बन गया है। स्कूलों ने खुद को समुदायों द्वारा स्वीकृत और सराहनीय गुणवत्तापूर्ण शिक्षा केन्द्रों के रूप में प्रदर्शित किया है। इस मॉडल ने समुदायों को राजकीय विद्यालयों से समान गुणवत्ता की शिक्षा की कल्पना करने और मांगने के लिए प्रोत्साहित किया।

मॉडल को आगे बढ़ाते हुए वर्तमान में हमारे आउटरिच कार्यक्रम – 'विस्तार' को रणथम्भौर राष्ट्रीय उद्यान के आसपास स्थिति गाँवों में वर्ष–2011 में 70 राजकीय विद्यालयों में शुरू किया गया। इसी माध्यम से हम समुदायों, सरकार, शिक्षाविदों, अन्य संगठनों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के पहलुओं को बढ़ावा देने, सीखने और समझने में मदद कर रहे हैं और नई शिक्षा पद्धति की जड़े मजबूत करके उन्हें फैलाने की कोशिश कर रहे हैं। ग्रामीण शिक्षा केन्द्र द्वारा समर्थित उदय पाठशालाओं को शिक्षा में योगदान के लिए राज्य और राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित किया जा चुका है। हमारा हर कदम संस्था के विजन और मिशन की तरफ बढ़ रहा है।

इसी कड़ी में एक प्रयास, बच्चों की रचनात्मक, कलात्मक क्षमता और कौशलों को बढ़ावा देने हेतु बाल पत्रिका 'मोरंगे' का सफलतापूर्वक प्रकाशन किया जा रहा है। बाल पत्रिका मोरंगे बच्चों के काम को व्यापक समुदाय तक पहुंचाने और उनसे जुड़ने का मंच प्रदान करती है। हमारे पाठकों और समर्थकों का सहयोग और जुड़ाव हमें लगातार प्रयास करने के लिए प्रेरित करता है।

**धन्यवाद।**

# रामवीर

कहते हैं किसी काम को जब कोई पहली बार करता है, उसकी सफलता में जो आंनद और खुशी मिलती है उसकी बात ही कुछ और होती है। उसकी यादें कभी धुंधली नहीं होती। बाद वाले तो उसके बनाए रास्ते पर चलते हैं। जिन्हें हर कोई याद नहीं रख पाता।

रामवीर के परिवार में उससे पहले कोई स्कूल नहीं गया था। उदय पाठशाला के शिक्षकों के प्रयासों ने ही उसे स्कूल से जोड़ा था। वरना उसके माता–पिता और वह स्वयं पढ़ने लिखने का महत्व ही नहीं समझते थे। समझेंगे भी कैसे? उनके समाज में स्कूल जाने और पढ़–लिखकर कुछ करने के विषय में तो वे सोच ही नहीं सकते थे। बात भी सही है जब आस–पास ऐसा कौई माहोल ही नहीं था। ये तो उदय

**मनीषा सैनी,** उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

पाठशाला के शिक्षकों के आरंभिक प्रयास ही थे कि उसे घर से लेकर आते और छोड़ने भी जाते। उसके माता–पिता को भी लगातार समझाते रहते। धीरे–धीरे रामवीर को स्कूल का वातावरण पसंद आने लगा और वह नियमित हो गया। स्कूल में मिलने वाली सुविधाओं के चलते उसकी परम्परागत रूचियाँ भी बदलने लगी थी। अब उसे गाँव के गली मोहल्ले के खेलों की जगह स्कूल में खिलाये जाने वाले खेल पसंद आने लगे। उसने सबसे ज्यादा समय फुटबॉल को दिया और वह उसमें अपना कौशल बढ़ाने लगा।

वक्त गुजरता गया और अन्य बच्चों के साथ उसका अभ्यास होने लगा। उस

वक्त किसी ने भी नहीं सोचा था कि उनके ये प्रयास एक दिन उन्हे बहुत आगे ले जाएंगे। वे और उनके शिक्षक तो बस अपना रोज का काम पूरी मेहनत और लगन से करते थे। स्कूल मैदान पर खेलते–खेलते एक ठीक–ठाक टीम बन चली थी। इसलिए बच्चो को नए अनुभव देने के इरादे से टीम को जिला स्तरीय खेलों में उतार दिया। किसी को अंदाजा नहीं था कि रामवीर के लिए एक नया दरवाजा खुलने वाला है। रामवीर ने इस प्रतियोगिता में अच्छा खेल दिखाया था। जिसके चलते टीम फाइनल तक पहुँच गई। कहते हैं सपना देखने से पहले सपना पूरा हो जाए तो कुछ समझ ही नहीं आता कि क्या हो गया है। इस टीम के साथ भी यही हुआ लोगों के लिए उदय टीम का फाइनल में पहुँचना एक अविश्वसनीय घटना थी। उन्हें तो मालूम ही नहीं था कि खेलते–खेलते उन्होने क्या कर दिया। हार–जीत की चिन्ता किए बगैर वे तो खेलते चले गये। उन्हें यही सिखाया भी गया था। रामवीर और

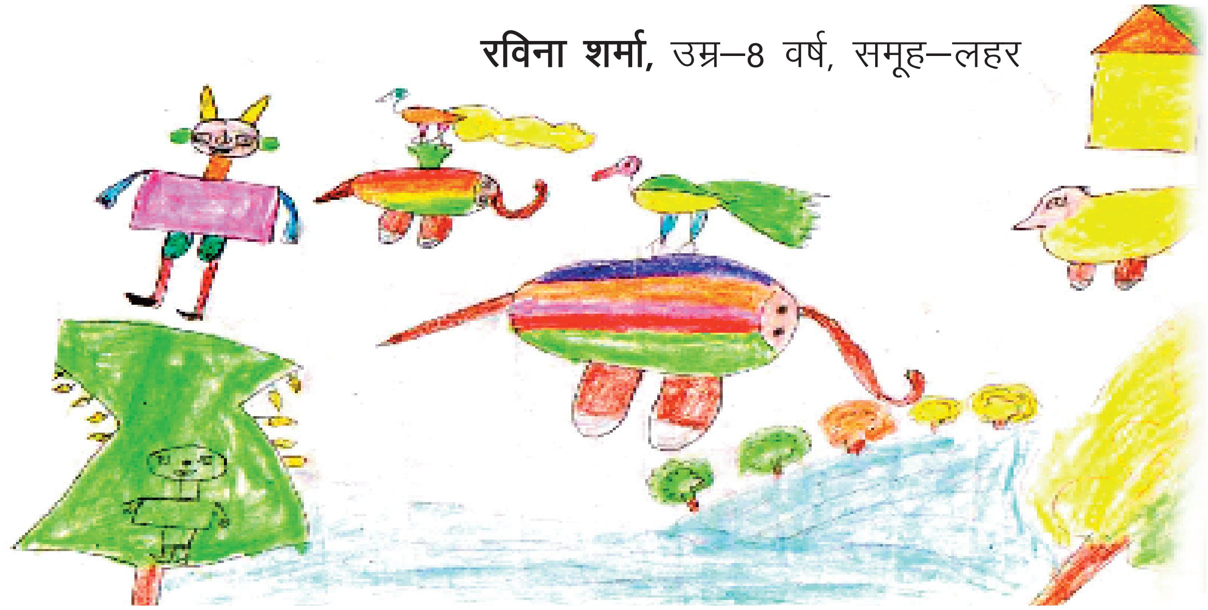

**रविना शर्मा,** उम्र–8 वर्ष, समूह–लहर

तीन अन्य खिलाड़ियों सहित कुल चार बच्चों का स्टेट टीम में चयन हो गया। रामवीर और उसके परिवार सहित पूरे गाँव को यही समझ आया कि अब ये कुछ दिन और खेलने के लिए जायेंगे। जिससे पढ़ाई का नुकसान होगा ऊपर से आने–जाने का खर्चा। माता–पिता तो कुछ देने वाले थे नहीं। उनके लिए तो यह एक अजीब बात थी कि एक तो स्कूल की पढ़ाई छोड़कर खेलने जाओ और ऊपर से पैसे और दो। शिक्षक यह बात पहले से समझते थे। इसलिए पैसे स्कूल की तरफ से भर दिये गये थे। तीन दिन का प्रशिक्षण शिविर लगा सभी को नया किट मिला जो अब उनका हो चुका था।

स्टेट की टीम में कई खिलाड़ी रामवीर से कहीं ज्यादा अच्छा खेलते थे। पर कुछ बात थी इसमें जब भी कठिन मैच होता तो अचानक से रामवीर के खेल का

स्तर ऊँचा उठ जाता। अब परिणाम चाहे जो हो पर रामवीर लोगों की नजर में आ जाता। स्टेट में भी यही हुआ। कोई पहचान नहीं होने के कारण उसे अतिरिक्त खिलाड़ी के रूप में रखा और खेलने का अवसर ही नहीं दिया। वैकल्पिक खिलाड़ी के रूम में जैसे ही उसे मैदान पर भेजा एक बार फिर उसने चयनकर्ताओं को प्रभावित किया। टीम तो लीग मैचों में बहार हो गई लेकिन रामवीर को नेशनल के लिए चुन लिया गया। कहते हैं ना जो अवसर का लाभ उठाता है किस्मत भी उसी का साथ देती हैं। लोगों के बदले व्यवहार से उसे ज्यादा तो कुछ समझ नहीं आया पर इतना जरूर समझ गया कि उसने खेल–खेल में कोई बड़ा काम कर दिया है। काम भी ऐसा जो हर किसी से नहीं होता। बात भी सही थी। वह भी रामवीर जैसे बालक से जिसे खुद नही मालूम था कि वह क्या कर सकता है। रामवीर अपने आस–पास के इलाके में पहला बच्चा था जो फुटबॉल जैसे शहरी खेल में नेशनल खेलकर आया था। उसकी उपलब्धि कितनी बड़ी थी ये तो उसे और उसके पूरे गाँव को जब समझ आया जब उसे 26 जनवरी पर जिला कलेक्टर द्वारा सम्मानित किया गया। उसे जीप पर बैठाकर पूरे शहर में घुमाया गया। वर्ष भर एक सुपर हीरो की तरह उसका सम्मान होता रहा।

**रिंकु मीना,** उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

अब तो उसके माता–पिता ने स्कूल को खुली छुट देते हुए कहा, ''माटसाहब, आपका बच्चा है। अब आप जहाँ चाहें वहाँ इसे ले जाओ। अब हम खेलने और पढ़ने से इसे नहीं रोकेंगे।'' अगले ही वर्ष उसका खेल अकादमी में एड़मीशन हो गया और फिर वहाँ से शुरू होता है लगातार खेलने का सफर जो आज कॉलेज तक जारी है। आज रामवीर के बनाए रास्ते पर चलकर उस गाँव के लड़के ही नहीं लड़कियाँ भी नेशनल लेवल पर खेल रही हैं। रामवीर जब भी गाँव आता है तो उदय स्कूल पर जाना नहीं भूलता। अपने छुट्टियों के दिनों में वह उदय के नन्हे मुन्नों को उसी तरह खेलना सिखाता है। जिस तरह कभी उसके गुरुजी ने उसे सिखाया था।

**विष्णु गोपाल**

# छम्मा–छम्मा

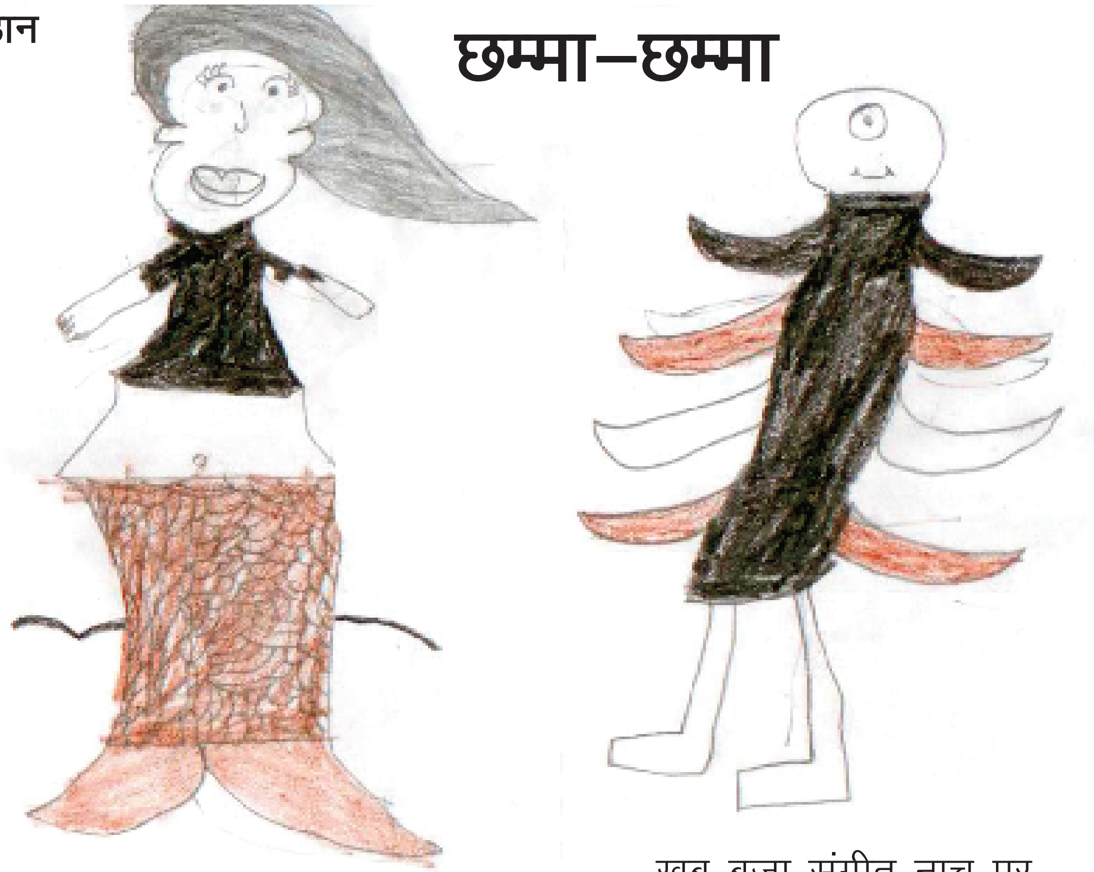

**ज्योति बैरवा,** कक्षा–5, राजकीय विद्यालय पावंडी

झोलक–झोलक, झम्मा–झम्मा,
उई अम्मा, उई अम्मा।
तोता–मैना नाच रहे हैं,
छत पर छम्मा–छम्मा।

नाच देखकर कोयल दीदी,
दौड़ी–दौड़ी आई।
हाथ पकड़ कर कौए को भी,
खींच–खींच कर लाई।
फिर दोनों ही लगे नाचने,
धुम्मा–धुम्मा–धुम्मा।

शोर हुआ छत पर तो सारे,
पंछी दौड़े आए।
ढोल–मंजीरा तबला–टिमकी,
बांध गले में लाए।

खूब बजा संगीत नाच पर,
ढमर–ढमर, ढम ढम्मा।

कुत्ते–बिल्ली गाय–बैल भी,
बीच सडक पर नाचे।
खुशियों वाले पर्चे लेकर,
सब घर –घर में बांटे।
पर्चे पढ़कर नाचे दादा,
दादी बापू अम्मा।

पर्चों में यह लिखा हुआ था,
खुशियां रोज मनाओ।
छोड़ो दुःख का रोना–धोना,
नाचो कूदो गाओ।
धूम मची तो लगे नाचने,
सोनू मोनू पम्मा।

**स्रोत – विष्णु गोपाल**

# राखी

राखी आई राखी आई।
धूम–धाम से राखी आई।
बहनों का त्योहार है राखी।
भाई ने बहन से राखी बंधवाई।
बहन ने भाई को खिलाई मिठाई।
भाई ने भी बहन को चाय पिलाई।

**मनकुश गुर्जर,**
उम्र–10 वर्ष, समूह–सागर

**भारती सैनी,** उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

# बाड़ी में बंदर

माली की बाड़ी में बंदर।
देखो कितना सुंदर बंदर।
देखो रंग रंगीला बंदर।
माली आता डंडा दिखाता।
बंदर सरपट भाग जाता।
बाद में वह खीं खीं करता।

**अन्तिमा गुर्जर,**
उम्र–9 वर्ष, समूह–सागर

**प्रिया,** उम्र–8 वर्ष, समूह–रिमझिम

# रामकथा

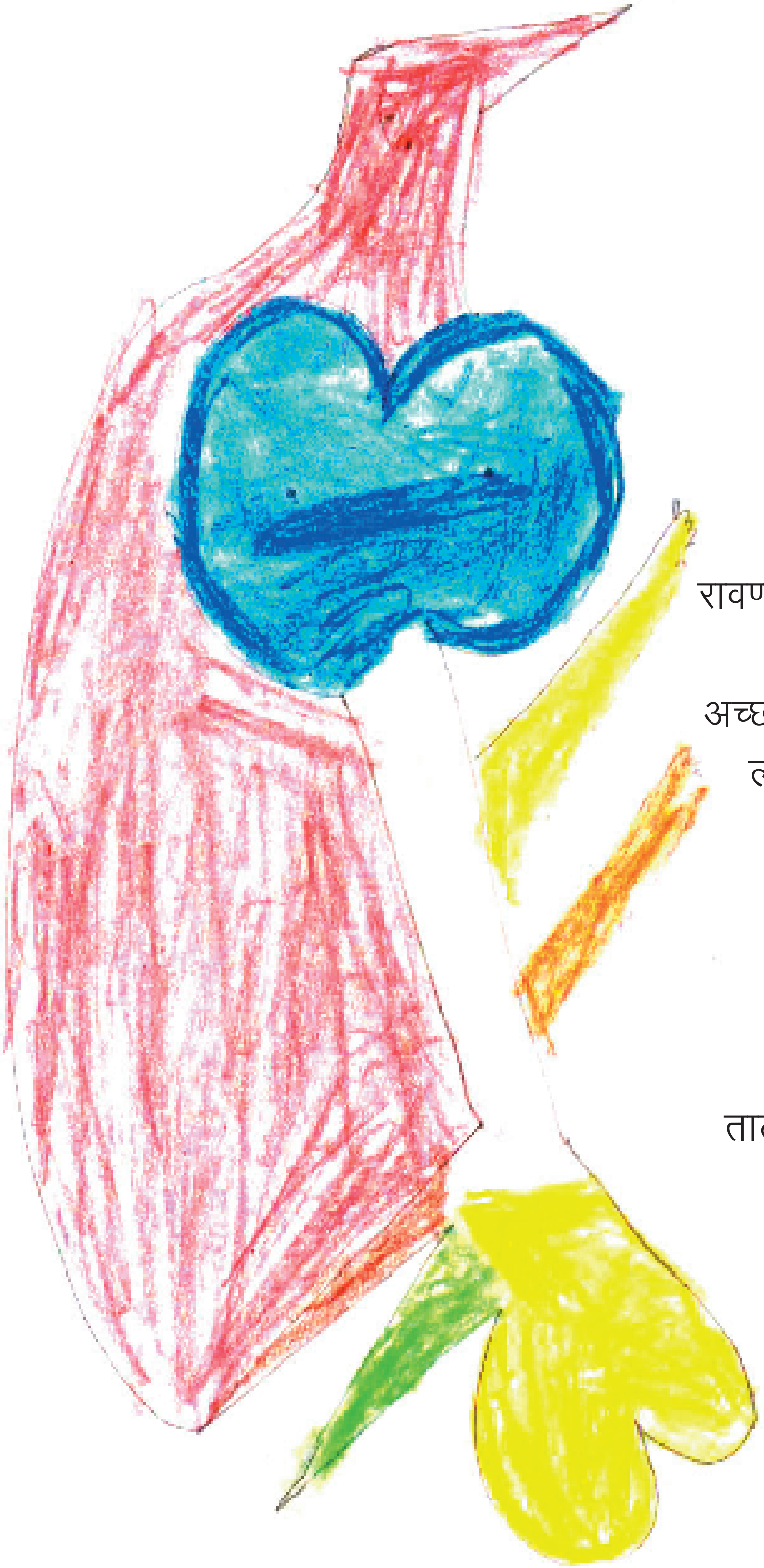

रावण ले गया सीता।
राम रह गया रोता।

राम हुआ परेशान।
फिर आया हनुमान।

हनुमान ने जलाई लंका।
रावण के महल में बज गया डंका।

अच्छी नहीं थी सीता की तकदीर।
लक्ष्मण ने खाया सीने पर तीर।

रावण ने बुलाया कुम्भकरण।
उसका भी आ गया मरण।

राम ने चलाया उस पर तीर।
तालाब में जा गिरा उसका सिर।

सीता के हुए लव कुश।
राम हो गये बहुत खुश।

**सोनू मीना,**
समूह–उजाला, उम्र–10 वर्ष

**दिलबर बैरवा,** कक्षा–2, उदय सामुदायिक पाठशाला फरिया

# मैं बाजार जाऊँ

बहुत पुरानी बात है। एक गाँव में एक बूढ़ी औरत रहती थी। उसका कोई भी नहीं था। एक दिन उसने सोचा सब बाजार जाते हैं क्यों न मैं एक बार बाजार जाऊँ। वह जंगल के रास्ते रास्ते जा रही थी। उस रास्ते पर कई सारी कारें भी आ–जा रही थी और कुछ लोग पैदल भी आ–जा रहे थे। वहाँ एक नदी भी थी जो बहुत दूर तक जा रही थी। उस नदी में मछलियाँ व मगरमच्छ रहते थे। बारिस के दिन थे तो सड़क के ऊपर से भी पानी निकल रहा था। बुढ़िया सडक पर कुछ दूर चही ही थी कि धीरे–धीरे बारिश भी होने लगी। जैसे ही बारिश की बूंदे टपकी तो सभी लोग इधर–उधर जाने लगे। वहाँ पर से सभी लोग चले गये। थोड़ी देर में बहुत

**सपना बैरवा**, उम्र–9 वर्ष, समूह–सूरज

तेज बारिश होने लगी। बुढ़िया को रास्ता समझ नहीं आया और वह जंगल में भट. कती रही। उसे जंगल में बहुत तेज भूख लगी। उसे एक आम का पेड़ दिखा। पेड़ देखकर बुढ़िया बहुत खुश हुई। उसके आस–पास बहुत घास हो रही थी। उसने आम तोड़ने के लिए पत्थर की मारी परन्तु आम नहीं टूटे। वह थक–हार कर वहीं बैठ गई। फिर वहाँ से एक आदमी गुजरा तो उसने बुढ़िया को कुछ खाने के लिए दिया और उस बुढ़िया को उसके गाँव में वापस छोड़कर आया।

**अन्तिमा कुमारी**, उम्र–12 वर्ष, समूह–सागर

# ईमानदारी

**आरती,** उम्र–10 वर्ष, समूह–रंगोली

एक बार की बात है। एक राजा था। वह रामपुरा गाँव का राजा था। एक दिन राजा को दूसरे राजा ने अपने राज्य में बुलाया। वह राजा जब दूसरे राज्य में जा रहा था तो वह एक खेत के पास से गुजरा। उस खेत में एक किसान काम कर रहा था। वहाँ राजा के गले से अचानक सोने का हार गिर गया। राजा को हार गिरने का पता ही नहीं चला और वह वहाँ से दूर चला गया।

जब किसान खेत से वापस लौट रहा था तो उसे वह हार दिखाई दिया। हार बहुत तेज चमक रहा था। वह समझ गया कि यह हार राजा का ही है क्योंकि राजा जी ही अभी इधर से निकले थे। उसने वह हार एक पेड़ से बांध दिया और अपने काम में लग गया। राजा जब वापस अपने राज्य में आया तो उसे उसके हार के खोने का पता चला। उसने सै. निकों से हार को ढूंढने के लिए कहा। सैनिकों ने पूरे राज्य में सभी जगहों पर हार को ढूंढा परन्तु हार कहीं नहीं मिला। सैनिक उस किसान के पास भी गये और उससे भी हार के बारे में पूछा तो किसान ने कुछ नहीं बताया। सैनिकों ने वापस आकर राजा से कहा कि आपका हार कहीं भी नहीं मिला। राजा दुःखी होकर बैठ गया।

शाम को वह किसान राजा से मिलने गया तो सैनिकों ने उसे दरवाजे पर ही रोक लिया और अंदर नहीं जाने दिया। किसान ने कहा कि मैं राजा की एक चीज लौटाने आया हूँ। सैनिक समझ गये कि शायद यह राजा का खोया हुआ हार लौटाने आया है इसलिए सैनिकों ने उसे महल के अंदर जाने दिया। राजा ने किसान से कहा कि, 'कहो, कैसे आये हो?'' किसान ने कहा, ''महाराज, ''मैं आपका खोया हुआ हार लौटाने आया हूँ।'' हार को देखकर राजा बहुत खुश हुआ। फिर राजा ने किसान से पूछा कि, ''तुम्हें यह हार कहाँ, कैसे मिला?'' किसान ने राजा को सारी बात बता. ई। राजा किसान की ईमानदारी देखकर बहुत खुश हुआ। राजा ने किसान को सोने का एक कंगन उपहार में दिया। किसान उस सोने के कंगन को लेकर खुशी–खुशी अपने घर आ गया।

**निरमा मीना**, कक्षा–8, राजकीय उ.मा.वि. अल्लापुर

# विश्वास

एक बार की बात है। एक जंगल था। जंगल का राजा शेर एक दिन पास के गाँव में चला गया। वह गाँव में गया तो उसने देखा कि यहाँ कोई भी नहीं है। इतने में ही एक आदमी आया। शेर ने आदमी से पूछा कि यहाँ से सब लोग कहाँ चले गये हैं?'' आदमी ने कहा, ''तुमसे डर के सभी लोग गाँव छोड़कर चले गये हैं। क्योंकि

**मीनाक्षी सैनी,** उम्र–11 वर्ष, समूह–रंगोली

तुम लोगों को खा जाते हो।'' शेर ने कहा ''नहीं, अब मैं किसी भी व्यक्ति को नहीं खाऊंगा। मुझे जोर की भूख लग रही है।'' आदमी ने उस पर विश्वास कर लिया और उसे खाना खिलाने के लिए अपने घर ले गया। शेर ने आदमी के घर पर पेट भरकर खाना खाया। शेर ने कहा कि मैं रोज तुम्हारे घर पर खाना खाऊँगा। फिर शेर वापस जंगल में चला गया।

शेर कुछ दिनों तक उस आदमी के घर नहीं गया। शेर को जंगल में एक दिन एक बंदर मिला तो बंदर ने शेर से कहा, ''तुम्हें उस आदमी ने खाना खाने के लिए बुलाया है तुम बहुत दिनों से वहाँ नहीं गये हो।'' शेर उस बंदर के साथ चला गया। शेर और बंदर ने आदमी के घर खाना खाया तो आदमी बोला, ''मैं भी तुम्हारे साथ जंगल में चलूंगा।'' शेर ने कहा, ''अभी बहुत रात हो गई है, हम जाते हैं तुम सुबह होते ही आ जाना।'' सुबह होते ही वह आदमी जंगल में चला गया। शेर को मांस खाये हुए बहुत दिन हो गये थे तो उसे मांस खाने का मन हो रहा था। तो शेर उस आदमी को ही खा गया।

**आरती नायक**, उम्र–8 वर्ष, समूह–लहर

# विज्ञान अन्ध विश्वास पर भारी

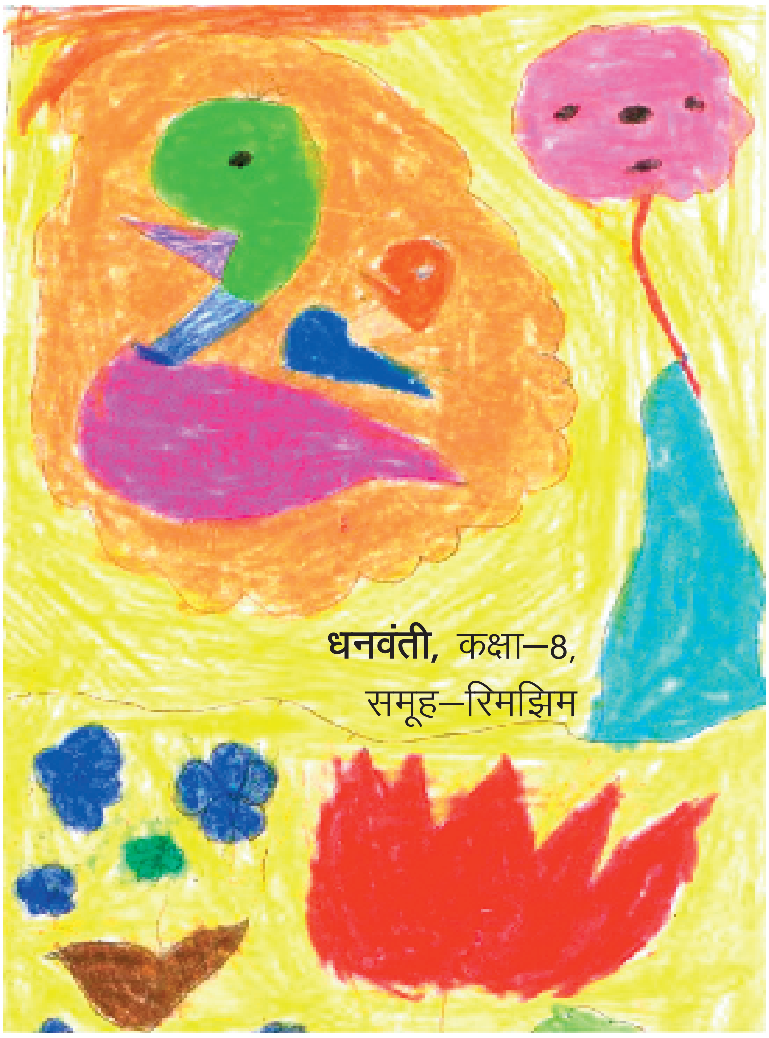

**धनवंती,** कक्षा–8, समूह–रिमझिम

मेरे पड़ौस में रमेश नाम का एक व्यक्ति रहता था। वह था तो गरीब फिर भी अपने बीबी–बच्चों के साथ खुश रहता था। एक बार उसकी पत्नी बीमार हो गई। शुरू में तो ज्यादा कुछ नहीं हुआ था। बस खाना न पचना एवं हिचकी–ऊबकारी आ रही थी। रमेश ने अपनी सामर्थ्य से अधिक सरकारी व प्राइवेट सभी डॉक्टरों से खूब ईलाज करवाया। बदकिस्मती से बीमारी घटने की जगह बढ़ती ही चली गई। तरह–तरह की जाँच करवाने पर भी डॉक्टर बीमारी नहीं समझ पाए। कई लोगों ने बताया कि यह डॉक्टरों से ठीक होने वाली बीमारी नहीं है। इसमें तो ऊपरी हवा का चक्कर है। यह सुनकर रमेश को विश्वास होने लगा कि ''कोई बामारी होती तो जाँच में आती और काबिल डॉक्टर इसका ईलाज कर देते।''

अब तो रमेश को जहाँ के लिए बताता वह वहीं पर जाने लगा। सभी देवी–देवताओं की पूजा–अर्चना की। साधू–संतों, हाथ देखने वाले, टोटका करने वाले सभी के यहाँ जाने लगा। यदि किसी भोपा–पुजारी के पास जाता तो वह देवी–देवताओं के नाराज होने का कारण बताते और साधू या टोटका करने वाले के पास जाता तो वे उसे ऊपरी हवा का कारण बताते। रमेश ने देवी–देवताओं को मनाने के लिए सारे धर्म–कर्म के काम कर लिए और साथ ही टोने–टोटके के काम भी करता रहा।

**भारती नायक,**
उम्र–10 वर्ष
समूह–लहर

जैसे रात को 12 बजे खप्पर जैसी चीजें रखना आदि। इन सभी प्रयासों में लगभग 2–3 महीने लग गये। रमेश की आर्थिक स्थिति और कम. जोर होने व पत्नी के ठीक होने की उम्मीद भी कम होने लगी। रमेश अब पूरी तरह हताश हो चुका था और टूट चुका था। एक दिन तो उसकी पत्नी मरणासन्न हो गई थी और उसे खाट से नीचे भी उतार लिया गया। थोड़ी उम्मीद होने पर तुरन्त डॉक्टर के पास ले गये। डॉक्टर ने गोली–इन्जेंक्शन देकर कहा कि इसे इस जयपुर के फलां डॉक्टर के पास ले जाओ। रमेश ने ऐसा ही किया। वह उसकी पत्नी को जयपुर डॉक्टर के पास लेकर गया। डॉक्टर ने कुछ जांच लिखी और 7 दिन की दवाईयाँ दी और बताया कि इसे गैस्टिक प्रोबलम है जो जाँच में नहीं आती। रमेश ने घर आकर दवा–दारू शुरू की। 2–3 दिनों में तबीयत में सुधार होता दिखाई देने लगा और कुछ ही दिनों में उसकी पत्नी ठीक हो गई। अब रमेश के घर में पहले जैसी खुशी लौटने लगी। रमेश समझ गया कि आखिर हवा–भूत–प्रेत जैसी कोई चीज नहीं होती हैं।

**कमलेश कुमार**, शिक्षक, उदय सामुदायिक पाठशाला जगनपुरा

**कोमल बैरवा,** कक्षा–4,
उदय सामुदायिक
पाठशाला फरिया

# बरसात के बादल

बरसात के दिनों की बात है। मैं बच्चों के साथ अंग्रेजी की थीम– The Rain पर पूर्व प्राथमिक कक्षा में काम कर रही थी। बच्चों ने पोइम एक्शन व पिक्चर देखकर मेरे साथ दोहराया। पोइम करने के बाद इस पर बच्चों से बात करना शुरू किया कि बताओ बरसात कहाँ से आती है। इस पर सभी बच्चों ने कहा आसमान से। मैंने कहा आसमान में कहाँ से तो बच्चे बोले बादल से। इस पर मैंने पूछा कि बादल के पास पानी कहाँ से आता होगा? वह तो ऊपर आसमान में रहता है और पानी कुएँ, नदी, टंकी, नल, तालाब, समुद्र में रहता है। इस पर बच्चों ने कुछ रोचक जवाब दिये।

जैसे एक बच्चे ने कहा, ''रात में जब सब सो जाते हैं तो बादल चुपके से आकर पानी को घड़े भर–भरकर ऊपर ले जाते हैं।''

दूसरे ने कहा, ''बादल रात में जमीन के अंदर से रास्ता बनाकर ऊपर ले जाता है।''

कुछ बच्चों ने कहा, ''भगवान बादलों में पानी भर देता है।''

कुछ देर तक मैं बच्चों के कल्पनाओं भरे जवाब सुनती रही। उसके बाद जब सब चुप हो गये तो मैं बच्चों को बाहर ले गई और ऊपर आसमान में देखने को कहा। बच्चों ने ऊपर आसमान में देखा और खुशी से झूमने लगे और कहने लगे बड़ा बादल, काला बादल, छोटा बादल, इतने सारे बादल। बच्चों से मैंने पूछा कि अगर पानी भगवान भरते हैं या बादल भरकर ले जाते हैं तो बादल छोटे–बड़े व अलग–अलग जगह क्यों हैं? इस पर सभी बच्चे चुप हो गये तब बच्चों से मैंने पूछा कि तुमने चूल्हे पर रखे पानी, चाय, दूध में से धुँआ उड़ता हुआ देखा है? इस पर बच्चों ने कहा, ''हाँ।''

मैंने कहा कि उस धुएँ को भाप कहते हैं। और वह दूध, चाय, पानी आदि में होती है। वहीं गर्म होने पर भाप बनकर हवा के सहारे ऊपर चला जाता है। इसी प्रकार जब तेज गर्मी होती है। सूरज तेज चमक रहा होता है तो उससे नदी, तालाब, झील का पानी भाप बनकर हवा के सहारे ऊपर उड़ जाता है और आसमान में पहुँचने पर बादल बन जाते हैं। जब बादल ठंडी हवा के कणों से टकराते हैं तो बादल फूट जाते हैं और बारिश बनकर बरसने लगते हैं। सभी बच्चे मेरी बात को ध्यानपूर्वक सुन रहे थे और आश्चर्य भरी आँखों से बादलों के झुंड को देख रहे थे।

**सपना राजावत**, शिक्षिका, उदय सामुदायिक पाठशाला गिरिराजपुरा

**अर्चना चौधरी,** राजकीय विद्यालय अल्लापुर

**कलाकारी**

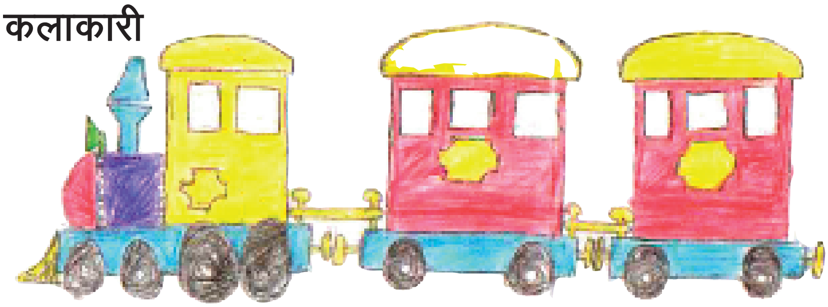

**ज्योति बैरवा,** कक्षा–5,
उदय सामुदायिक
पाठशाला फरिया

# कागज का थैला

आज सब कुछ पॉलीथीन में भरकर दिया जा रहा है। लोग अपने घर से खाली हाथ निकलते हैं। जब हम छोटे थे तब बाजार से सामान लेने पर दुकानदार कागज के थेले में सामान देता था। यदि कोई तरल चीज लेनी हो तो घर से काच की बोतल या बर्तन लेकर जाते थे। पूरे सामान को रखने के लिए भी कपडे का थैला घर से लेकर निकलते थे। इसलिए बाजार में कागज के थैलों की बहुत मांग थी।

हमारी स्कूल में भी उद्योग–पीटी के मूल्यांकन में बच्चे कागज के थैले बनाकर लेकर जाते थे। कुछ बच्चे तो बाजार से बने–बनाए थैले लेकर जमा करवा देते। मैने कभी ऐसा नहीं किया। मैं अपने गृह कार्य और कक्षा कार्य की भरी हुई कॉपियों के पन्नों से लिफाफे बनाता था। इसके लिए घर के रद्दी पेपर का भी उपयोग करता था। ज्यादा बन जाने पर मैं उनको किसी दुकानदार को बेच देता था। इन पैसों को मुझसे कोई नहीं मांगता था। ये मेरी मेहनत की कमाई थी जो मेरे जेब खर्च के काम आती थी।

जब मैने पहली बार थैला बनाने की कोशिस की तो देखने से तो लगा की थैला सही बन गया है। पर जब उसमें सामान भरा तो नीचे की तरफ से रिसकर चीनी बहार आने लगी। मुझे कुछ समझ नही आया अब क्या करूं? फिर मैने एक बना–बनाया लिफाफा लिया और उसे खोलकर देखा और फिर से उसे आटे की लाई बनाकर पैक कर दिया। अब मुझे समझ आ गया था कि मुझसे कहाँ गलती हुई थी। इसके बात तो मैने हर आकार प्रकार के लिफाफे बनाए और बेचे। आंप भी एक कागज का थैला लें और उसे खोलकर समझें याद नहीं रहे तो लिखकर रख लें और उसे फिर से पैक करके लिफाफा बनाने का अभ्यास करें। यह पॉली. थीन के मुकाबले आसानी से गल जाता है जिसकी वजह से पर्यावरण को कोई नुकसान नहीं पहुँचता है।

**विष्णु गोपाल**

चेतना बैरवा, उम्र–12 वर्ष, कटार

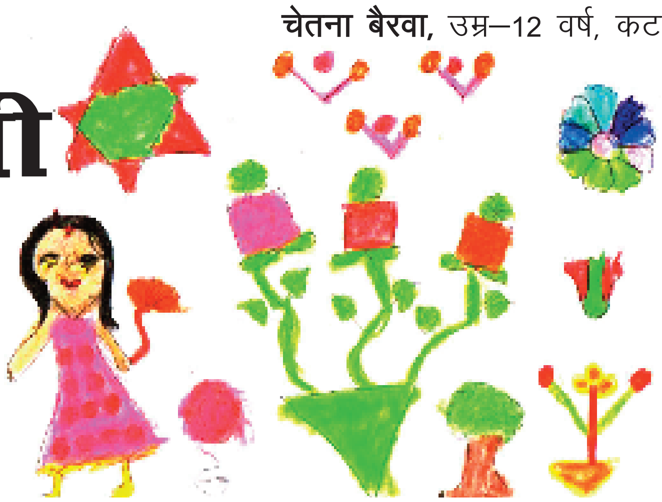

# अमीरी-गरीबी

एक बार एक गाँव में पंडित और पंडिताईन थे। वे अपना खर्चा बड़ी मेहनत से कमाकर चला पाते थे। एक दिन उनके पास सारे पैसे समाप्त हो गये। उनके पास कुछ नहीं बचा था। पंडितानी ने कहा, ''अब तो हमें भीख मांगनी पड़ेगी।'' पंडित ने कहा, ''हमारे पास कुछ नहीं है फिर भी हम भीख नहीं मांगेंगे, हम भूखे ही रहेंगे।''

पंडित और पंडिताईन दोनों ही राजा के पास गये। उन्होंने राजा को उनकी गरीबी के बारे में बताया। राजा ने कहा, ''दूर जंगल के बीच में एक आम का बहुत बड़ा पेड़ है। उस आम के पेड़ पर रात के 12 बजे जाकर लाल रूमाल बांधेगा उस व्यक्ति को मे 100 बीघा जमीन दूंगा।''

यह सुनकर पंडित ने कहा कि मैं आज रात को ही 12 बजे जाकर उस पेड़ पर लाल रूमाल बांध दूंगा। पंडिताईन ने कहा कि मत जाओ, उस पेड़ पर भूत रहते हैं। पंडित ने पंडिताईन की बात नहीं मानी और वहाँ चला गया। पंडित जब पेड़ के पास पहुँचा तो वहाँ बहुत सारे भूत आ गये। भूतों ने कहा तुम मरना चाहते हो क्या जो यहाँ आ गये हो। पंडित ने कहा मेरे पास कुछ भी नहीं है। बहुत दिनों से भूखा हूँ, मैं तो वैसे भी मरता। मुझसे राजा ने कहा कि यदि तुम इस पेड़ पर रात में जाकर लाल रूमाल बांधकर वापस आ जाओगे तो तुम्हें 100 बीघा जमीन दूंगा।''

भूतों को उस पर दया आ गई और उसे छोड़ दिया। पंडित ने पेड़ पर लाल रूमाल बांध दिया। दूसरे दिन राजा ने देखा तो वह खुश हो गया और उसे 100 बीघा जमीन दे दी। पंडित ने उस जमीन में चावल की फसल बोई परन्तु उससे फसल कट नहीं पाई। पंडित एक दिन वापस रात के समय उसी पेड़ के नीचे गया और भूतों को सारी बात बताई। भूतों ने कहा कि हम रात में तुम्हारे खेत पर आ जायेंगे और तुम्हारी फसल को काट जायेंगे। दूसरे दिन की रात को सारे भूत उसके खेत में आए और उसकी चावल की फसल को काट दिया। सुबह जब पंडित खेत पर आया तो उसने कटी हुई फसल को देखा तो उसे बहुत खुशी हुई। अब पंडित और पंडिताईन रोज भर पेट चावल खाते और खुश रहते।

**अंकिता मीना**, उम्र–10 वर्ष, समूह–रोशनी

# मेहनत का फल

एक लड़की थी। उसकी एक सौतेली माँ थी। सौतेली माँ के भी अपनी एक लड़की थी। सौतेली माँ अपनी लड़की से कुछ काम नहीं करवाती थी और उससे ही सारा काम करवाती थी। एक बार उसके पिता की तबीयत खराब हो गई तो उस लड़की ने बाहर काम करने की सोची। वह काम करने के लिए चल पड़ी।

उसे रास्ते में एक पेड़ मिला उसने उससे कहा कि मेरी कुछ लकड़ियाँ तोड़ दो।

**सोनु मीना,** कक्षा–7, उदय सामुदायिक पाठशाला, जगनपुरा

लड़की ने वैसा ही किया। फिर वह आगे बढ़ चली।

आगे उसे एक जामुन का पेड़ मिला। पेड़ ने कहा कि तुम मेरी खुदाई कर दो तो लड़की ने वैसा ही किया और आगे बढ़ गई।

आगे उसे एक कुत्ता मिला। वह कुत्ता मिट्टी का हो गया था। कुत्ते ने कहा कि मुझे नदी में नहाने ले चलो। लड़की ने वैसा ही किया और वह भी नहा ली।

वह एक कुए के पास से गुजरी तो कुए ने कहा कि तुम मेरा पानी बाहर निकाल दो। लड़की ने वैसा ही किया और आगे बढ़ गई।

फिर उसे काम करने का घर मिल गया। उस घर में सात परियाँ रहती थी। वह उस घर में चली गई तो परियों ने पूछा कि तुम कौन हो। लड़की ने उन्हें सारी

**सोनु/नरेश,** समूह–सूरज, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

बात बता दी। परियों ने उसे छः कमरे की सफाई करने को कहा और कहा कि सातवें कमरे की सफाई मत करना। लड़की ने वैसा ही किया। वह रोज 6 कमरों की सफाई कर देती थी। परियों ने उसे जाने से पहले सोने–चांदी के जेवरात दिये। अब लड़की अपने पिता के पास वापस चल दी।

रास्ते में लड़की को प्यास लगी तो उसने उसी कुए से पानी पिया और वह चल दी।

आगे रास्ते में उसे वही कुत्ता मिला। कुत्ते ने कहा कि तुम जितने मोती लेना चाहो उतने ले जाओ। लड़की ने बहुत सारे मोती ले लिये और आगे चल दी।

आगे उसे वही जामुन का पेड़ मिला। पेड़ ने लडकी को जामुन का रस पिलाया। रस पीकर लड़की फिर आग चल दी।

आगे उसे आम का पेड़ मिला उसने वहाँ बहुत सारे आम खा लिये। उसने कुछ आम अपने पिता के लिए रख लिये। वह बड़े आराम से अपने घर पहुँच गई। लड़की ने सारे हीरे–मोती, सोना–चांदी अपने पिता को दे दिये। उनसे उसने पिताजी का ईलाज करवाया तो वे ठीक हो गये। फिर वे खुशी–खुशी रहने लगे।

**अंजली मीना**, उम्र–9 वर्ष, समूह–रोशनी

# माथापच्ची

**दिए गये 9 बिन्दुओं को बिना पैन उठाए इस तरह मिलाओं की 4 लाईन से ज्यादा नहीं बने और एक लाईन पर दुबारा पैन नहीं चले।**

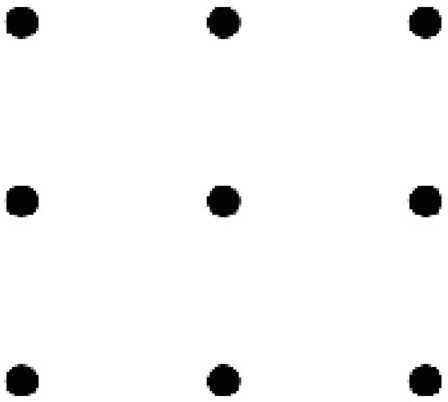

**किरण,** कक्षा–2, उदय सामुदायिक पाठशाला, फरिया

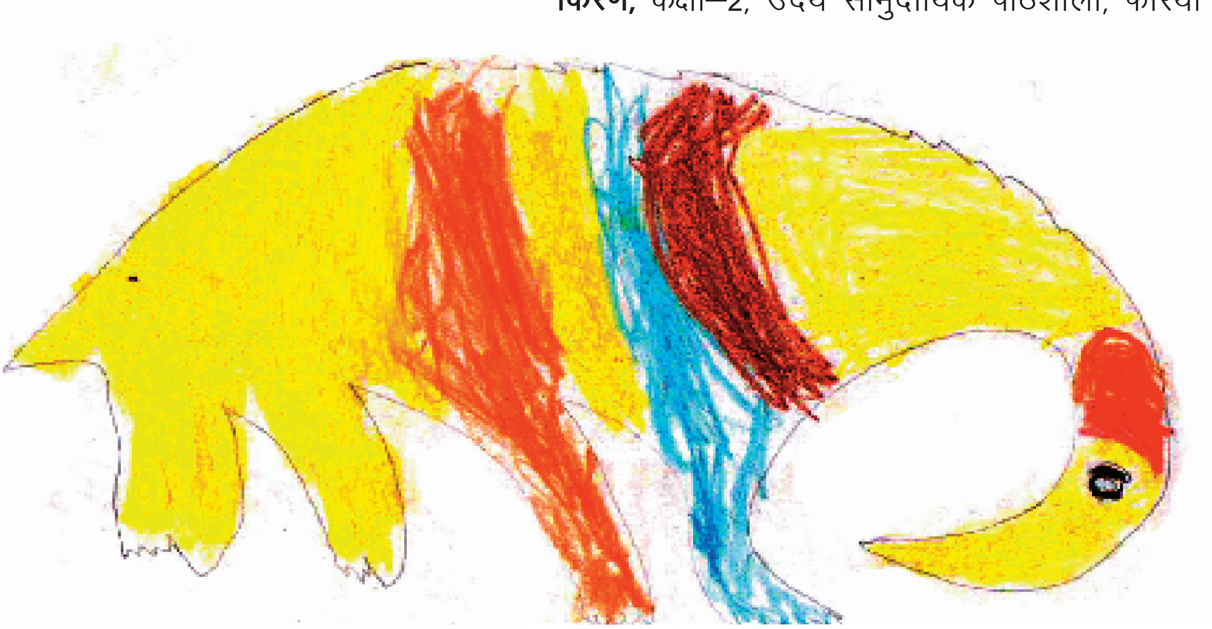

# हीहीही ठीठीठी

1 एक लड़के ने नई–नई साईकिल चलानी सीखी थी। वह साईकिल चलाते हुए पैडल से पैरा उठाकर बोला, ''देख रवि मेरे हाथ नहीं है।'' इतना कहते ही वह सा. ईकिल से गिर गया। रवि उसके पास आकर बोला,–राजू, देख अब तेरे दाँत भी नहीं है।

2 टीचर – बच्चों बताओ, भैंस पूंछ क्यों हिलाती है?

एक बच्चा – क्योंकि पूंछ में इतनी ताकत नहीं होती की भैंस को हिला सके।

**इन्टरनेट से साभार।**

# कुछ हमने बढ़ायी कुछ तुम बढ़ाओ
# बात में जोड़ो बात, गीत में कड़ी लगाओ

**एक बार दो भाई थे। उनमें बड़ा भाई बहुत सीधा था और छोटा भाई बहुत खोटा था। वह कोई न कोई शरारत करता रहता था। एक दिन की बात है, दोनों भाई एक दिन मेला देखने गये तो छोटे भाई को शरारत सूझी .....**

शिक्षिका **सपना राजावत** *द्वारा शुरू की गई कहानी को पूरा करके मोरंगे को भेजो।*

**अमरसिंह मीना**, समूह–रंगोली, उम्र–10 वर्ष द्वारा शुरू की गई कविता को पूरा करके मोरंगे को भेजो।

**रविना शर्मा,** उम्र–11 वर्ष, समूह–लहर

**ज्योति,** उम्र–8 वर्ष, समूह–खुशबू